International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैदिक में आत्म ज्ञान

डॉ0 अजित कुमार जैन, आचार्य

एम0ए0 (संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र)

आचार्य (जैन दर्शनम)

एसो0 प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

एस0वी0 कॉलेज, अलीगढ़ (उ0प्र0)

अपना ज्ञान, आत्म ज्ञान, एकत्व का ज्ञान, वास्तविक स्वरूप का ज्ञान इत्यादि सारे शब्द आध्यात्मिकता के अंतर्गत ही हैं। भारतीय उपनिषद साहित्य का वर्ण्य विषय मुख्यतः ज्ञान, विद्या, अपरा विद्या, अलौकिक विद्या, आत्मनिष्ठ आदि विविध शब्दावली किन्तु भाव आत्मज्ञान ही है। भारतीय ज्ञान परम्परा का उत्स ही है–

''कोऽम? कः मम धर्मः?''[1]

यही भाव पुनः कथनीय है– ''कोऽहम? कुतायातः?'' इसका भाव / जानने का भाव जागना ही आध्यात्मिकता है। इस प्रकार भारतीय चिन्तन में आध्यात्मिकता वस्तुनिष्ठ ज्ञान है।[2] इसी क्रम में यहां यह कहना भी समीचीन है कि वेदान्त (उपनिषद्) ''सच्चिदानदानन्ता'' द्वयब्रहम वस्तु। ततो अन्यत् सर्वम् अवस्तु'' कहता हुआ संदेश दे रहा है कि वृह्म ही वस्तु है जो सत्य है और परिवर्तन रहित है जबकि इसके अतिरिक्त सब कुछ अर्थात् संसार सब मिथ्या है और परिवर्तनशील है, अतः अवस्तु है। सत्य ही कहा है कि– ''बृहम सत्यं जगन्मिथ्या''।[3]

आध्यात्मिकता का मार्ग पूर्णरूपेण सम्यक्तया उपनिषद साहित्य में प्राप्य है। कठोपनिषद में वर्णन है।[4]

''पराज्चि खानि..........आवृत्तचक्षुरमृतत्वामिच्छन्'' अर्थात् कोई विरला ही है जो इंन्द्रियों को वाह्य व्या पार से निवृत्त कर लौटाता हुआ आत्म अमरत्व की इच्छा कर अंतराभिमुख होता है।

आत्म और परमात्म के एकत्व का भाव आने पर–

''तत्र क : मोह कः शोक : एकत्वमनुपश्यतः''[5] फिर मोह / शोक को स्थान ही नहीं है।

कठोपनिषद का प्रसंग अत्यंत शिक्षाप्रद और यहां समीचीन है जहाँ नचिकेता ने यम से तीन वरदान मांगे। तब तृतीय वरदान के रूप में नचिकेता ने आत्म ज्ञान आत्मविद्या पाने की बात कही। तब यहां श्रेय और प्रेय मार्ग दो उपस्थित हैं किन्तु आध्यात्म ज्ञान की लालसा युक्त मोक्षमार्गी की भावना आत्म स्वरूप की ओर ही उन्मुख होती है।[6]

ईशावारयोपनिषद् में मंत्रसृष्टा दिव्यज्ञान सम्पन्न ऋषि ने कहा है– ''मा गृधः''[7] अर्थात् संसारी प्राणी के अध्यात्ममार्ग के अनुसरण में सर्वाधिक वारक तत्व ''लालच'' है जो उसे सन्मार्ग में आने के वजाय उन्मार्ग अर्थात् संसार भ्रमण हेतु वाध्य कर देता है।

सत् चित् और आनन्द रूप परमतत्व के साक्षात्कार में सत्य का आश्रय, सत्यनिष्ठता, सत्यवक्ता, सत्यान्वेषक सत्यदृष्टा हुए बिना कदापि संभव ही नहीं है। यह उल्लेख ईशोपनिषद् में प्राप्य है–

''हिरण्यमयेनपात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्वं पूषन्नावृणु सत्यधर्माम दृष्ट से।।''[8]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सत्य ही, प्रकारान्तर से, बृहम का स्थान है। यह उद्घोष उपनिषद् साहित्य में सर्वत्र विद्यमान है–

''सत्यमेव जयते नानृतम्''[9]

उक्तञचअन्यन्न–

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा[10]

संसारासक्ति से दूर रहकर कर्म के प्रति जागरूकता का ही संदेश श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीमत् कृष्णाचन्द्र भी अर्जुन को उपदेश माध्यम से दे रहे हैं–

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्''[11]

वन्धनों फल लालसा, आसक्ति, अकर्मण्यता आदि से बचने के बाद ही किए गये कर्म परमसत्ता के पाने का एकमात्र मार्ग है–

''कुर्वन्नेवैह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः''[12]

विश्वविश्रुत श्रीमद्भगवतगीता का ''कर्मयोग' यह उद्घोष करता है–

तस्माद्सक्त : सततं कार्यं कर्म समाचरः।
आसक्तो ह्म्राचारन्कर्म परमाप्नोति पुरूषः।।[13]

आत्म स्वरूप की शारश्त सत्ता का संकेत इस प्रकार दृष्टव्य है–

''नैनं छिन्दन्तिशस्त्राणि............।।[14] और कहा है–[15]

''हन्ता चेन्मन्यते हन्तुं हतश्चेन्मन्यते हतम्।
उभौतौ न विजानीतौं नायं हन्ति न हन्यते।।''

सारतः, इस शोधालेख के आलोक में यह कहा जा सकता है कि उपनिषद साहित्य में मंत्र सृष्टा पूज्य ऋषियों / महर्षियों ने अपने दिव्य और अनुभूत ज्ञान से संसारी प्राणी को उस

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परमतत्व सत्य स्वरूपी ब्रहम के साक्षात्कार हेतु संसारोन्मुख होने के स्थान पर आत्मोनमुख होकर साधना / आराधना और सत्यनिष्ठ जीवन जीने की सलाह दी है। इस प्रकार उपनिषदीय आध्यात्मिकता वर्तमान भौतिकवाद से बचाने को एक सशक्त माध्यम है।

सन्दर्भः–

1. पं0 आशाधर जी – सागर धर्माम्तम्
2. बृहम सूत्र शंकर भाष्य, सूत्र–2 (जन्माद्यस्य)
3. वेदान्त दर्शन
4. कठोपनिषद अध्याय – 2 / वल्ली–प्रथम/श्लोक – 1
5. ईशावास्योपनिषद – श्लोक सं0 7
6. ''श्रेयश्चरप्रेयश्च....'' कठोपनिषद– 1/2/1
7. ईशावास्योपयनिषद– श्लोक सं. 1
8. ईशोपनिषद – श्लोक सं. 15
9. मुण्डोपनिषद्
10. मुण्डकोपनिषद 3/1/15
11. श्रीमद्भागवत गीता 2/47
12. ईशावास्योपनिषद श्लौक सं. 2
13. श्रीमद्भगवत् गीता– अध्याय 3/श्लोक 19
14. श्रीमद्भगवत्गीता
15. कठोपनिषद – 1/2/19